सेवा निवृत्ति के बाद आराम से रहने हेतु सुझाव

पंकज गर्ग
रूड़की

- कम बोलें
- प्रभु का स्मरण अवश्यक करते रहें।
- मनचाही वस्तु न मिलने पर क्रोध न करें।
- अपनी धन–सम्पति का बार–बार बखान न करें।
- अपनी इच्छा पूर्ण करने की कोशिश न करें।
- खान–पान में संतोषी रहें, जो कुछ मिले प्रभु का प्रसाद समझ ग्रहण करें।
- यह आशा न करें कि हर काम हमसे पूछ कर किया जाए।
- बुढ़ापे के कष्ट को कर्मफल समझ कर खुशी–खुशी सहन करें।
- घर आये मेहमान से अपने घर की कोई बुराई न करें।
- पुत्रवधू–बेटी–बच्चों के कार्य में दखल न दें।
- पुत्रवधू–बेटी–पुत्री के कटु वचन सुन कर शान्त रहें।
- अपने स्वास्थ्य के अनुसार घर के कार्यों में सहयोग करें।
- ध्यान रहे कि प्रभु की कृपा से ही सब कुछ प्राप्त हुआ है, खाली हाथ आना व जाना है।

नज़रिया

माँ की आखों में	ममता
स्त्री की आँखों में	लज्जा
पिता की आँखों में	कर्तव्य
बहन की आँखों में	स्नेह
विद्यार्थी की आँखों में	जिज्ञासा
ईश्वर की आँखों में	दया
मित्र की आँखों में	सहयोग
बालक की आँखों में	भोलापन
गुरू की आँखों में	ज्ञान की ज्योति
दुश्मन की आँखों में	प्रतिशोध
गरीब की आँखों में	आशा
वैज्ञानिक की आँखों में	खोज
सज्जन की आँखों में	नम्रता
उद्यमी की आँखों में	भोजन

भक्ति की महिमा

- भक्ति जब भोजन से जुड़ जाती है, तो प्रसाद बन जाती है।
- भक्ति जब भ्रमण से जुड़ जाती है, तो वह तीर्थ बन जाती है।
- भक्ति जब काम से जुड़ जाती है, तो वह कर्म कहलाती है।
- भक्ति जब–जब इंसान के ह्रदय में आ जाती है, तो वह मानव बन जाती है।
- भक्ति जब भूख से जुड़ जाती है, तब वह व्रत और उपवास बन जाती है।
- भक्ति जब जल से जुड़ जाती है, तब वह चरणामृत बन जाता है।
- भक्ति जब क्रिया से जुड़ जाती है, तो सेवा कहलाती है।
- भक्ति जब घर में प्रवेश करती है, तो घर मंदिर बन जाता है।